(7) Dr. Sangita Aher (Hindi)

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

# विद्यावार्ता®

International Multilingual Referred Research Journal

Issue-34, Vol-06 April to June-2020

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

26) पौगंडावस्थेतील योगाची भूमिका (Role of Yoga in changing Adolescence)
डॉ. दिनेश हरीभाऊ तांदळे, जिल्हा - जळगांव (महाराष्ट्र) ||117

27) हैद्राबाद मुक्ति आंदोलन ऐतिहासिक दृष्टिसे
डॉ. व्यास सी. पी., जि. परभणी ||121

28) गाँधी जी की ग्राम स्वराज की संकल्पना एवं ग्रामीण उद्यमिता
डॉ. ज्योति आचार्य, भीलवाड़ा ||123

29) मीडिया में नारी का बदतला स्वरूप
प्रा. डॉ. संगिता एकनाथ आहेर, गेवराई ||130

30) हिंदी भाषा के विकास में महात्मा गांधी का योगदान
डॉ. बलीराम संभाजी भुकतरे, जिला लातूर ||133

31) संचार ग्राम विकास के लीए न्यु मीडिया मिश्रण
डॉ. घपेश पुंडलिकराव ढवळे ||136

32) समकालीन हिंदी उपन्यासों में चित्रित आदिवासी नारी
प्रा. अनिता भरतसिंग जाधव, जिला धुलियाँ ||139

33) पाकिस्तानी परमाणु शक्ति के विकास में चीन की विशेष भूमिका
प्रा.डॉ. आर. एस. पवार, जि.धुळे ||141

34) ज्ञानेन्द्र पतिकी कविताओं में पर्यावरण विमर्श
प्रा.डॉ. सुनील एम. पाटिल, जिला धुलियाँ ||144

35) तकनीकि के साथ बदलता हिन्दी साहित्य
डॉ० धर्मेन्द्र कुमार, मऊरानीपुर (झाँसी) ||146

36) सदियों से वंचित दलित जीवन के यातनाओं की महागाथा— 'तर्पण'
डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे, सातारा ||149

37) उषा प्रियम्वदा की कहानियों में नारी मुक्ति का स्वर
PARITA ZAGADA ||153

38) नहीं से नयी की कहानी - रेतसमाधि उपन्यास
प्रा.डॉ.मनोहर एल. भंडारे & श्रीमंडळे वैशाली शिवाजीराव, जि.लातूर (महाराष्ट्र) ||157

www.vidyawarta.com/03 — http://www.primingarea.blogspot.com

29

# मीडिया में नारी का बदतला स्वरूप

प्रा. डॉ. संगिता एकनाथ आहेर
महिला महाविद्यालय गेवराई

सदियों से भारतीय समाज में नारी की महत्वपुर्ण भूमिका रही है । आज की नारी अपने स्वाभिमान की रक्षा करना जानती है, शोषण के विरूध्द आवाज उठाना जानती है, सामाजिक और राजनीति में प्रभावात्मक योगदान देती है, इसलिए अबला नारी की छबि निश्चित ही बदली है बेशक नारी सबला और उर्जावान बनी है। हिन्दी साहित्य में भी नारी की इसी बदलती छबि को रेखांकित किया गया है। अखबार, पत्रिकां और साहित्य की सभी विधाओं के साथ–साथ नारी सक्षमीकरण अत्यधिक प्रभावात्मकता से समाज के सामने लाने का श्रेय मीडिया को खासतौर पर इलेक्ट्रानिक मीडिया को जाता है । क्योंकि इसे अनपढ् , छोटा – बूढा व्यक्ति देख और समझ सकता है ।

भूमंडलीकरण के साथ–साथ स्त्री की की ओर देखने का नजरिया भी बदल गया है । विवाह के लिए लडकी का रंग–रूप और सुन्दरता की जगह पर उसके उच्च पद से उसकी सहमियत आंकी जा रही है। आज की नारी ने उस हर क्षेत्र में अपनी जगह बना ली है, जहॉ केवल पुरूषों का आधिपत्य था। आज उसकी अपनी अलग और स्वतन्त्र पहचान बनाई हैं। उसने खुद सारी दुनिया को इसका एहसास कराया है । मीडिया का इसमें नि:संदेह बहुत बडा योगदान रहा है।

नारी सक्षमीकरण का मीडिया एक सशक्त माध्यम है । हॉ, यह सिक्के के दो पहलू की तरह गुण– दोषों से भरा हुआ भी है। क्योंकि मीडियाने ही नारी सशक्तिकरण को बढावा दिया, उसके कर्तृत्व को समाज के सामने लाया, उसे सक्षम बनाने की प्रेरणा भी दी । पुरानी और पारम्पारिक स्त्री की छवि–सिर पल्लू से ढँका हुआ, गर्दन झुकी हुई, नजर जमीन पर गढी हुई, लज्जा, डर, संकोच में सिमही हुई स्त्री ने अपने व्यक्तित्व को निखारा है। आधुनिक स्त्री पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर और ऑख में ऑख डालकर बात करती है, बडे से बडा निर्णय लेती है। हर क्षेत्र का परिचालन, प्रतिनिधित्व भी करती है। एक रूग्ण और खंडित समाज में स्त्री मानवीय सुषमा के इतने रूपों को अपने में समाये रख सकती है, तो श्रम, समानता और सोदर्य के वातावरण में तो वह सृष्टि की सबसे श्रेष्ठ कलाकृति लगेगी – भूक और प्रतिक्षारत कलाकृति नहीं, मुखर, अपने को व्यक्त करती हुई अपना उत्कर्ष खोजती और दुनिया में अपनी जगह बनाती हुई कलाकृती– जैसा हर सोचने समझनेवाले प्राणी को होना चाहिए ।१

जिस पुरूष व्यवस्था को ऑख मूँदकर वह स्वीकारती आयी थी, आज उसे नकारने की हिम्मत उसमें आयी है। उसके जीवन की दिशा उसने निश्चित की है, अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए रास्तें में आनेवाली मुश्किलों का उसे कोई भय नही है। कांटो की राह चलकर मंजिल को पाने की हिम्मत उसमें आयी है । उसने अपने अंदर की क्षमता को पहचान लिया और आत्मविश्वास के बल पर अपने व्यक्तित्व को निखारा है। उसकी आस्मिता के उत्थान में तकनिकि साधनों के साथ मीडिया के माध्यम से नारी की गौरव गाथा, शक्ती और वेदना को पढा, सुना और देखा जा रहा है। उसे सराहा भी जा रहा है और सहयोग भी दिया जा रहा है। और स्त्री का बदलता हुआ स्वरूप सामने आ रहा है।

मीडिया के कारण ही नारी समाज की मुख्य धारा से जुडने के लिए प्रेरित और सक्रिय हुई है। अपनी क्षमता को पहचाना और अपनी योग्यता का विकास करने के लिए अग्रेषित हुई । खबरों की दुनिया में तहलका मचा देनेवाला मीडिया का प्रतिनिधित्व भी स्त्री करने लगी । पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अब नारी का स्वर प्रखरता से गुँज रहा है। नारी में संवाद कौशल एंव अभिव्यक्त करने की खुशी अधिक बेहतर होने के

कारण इस क्षेत्र में स्त्रियों का वर्चस्व बढ रहा है। जहाँ एक ओर टी.वी. की जानी मानी पत्रकार बरखा दत्त ने कारगिल युध्द की कवरेज कर दिखा दिया कि महिलां केवल कवि की कल्पना मात्र नही है।२ संवेदना के स्तर पर कोई भी बात पत्रकार को विचलित नहीं करती, वह अत्यन्त दृढ और संयमी है इसीलिए उसकी लेखनी में गहनता आ गयी हैं। नारीत्व का सम्मान करते हुए सशक्त पत्रकारिता दिखाई देती है। समाज की सोच को बदलने का अहम काम मीडियाने किया है। स्त्री सक्षमीकरण के कारण स्त्री का बदलता हुआ स्वरूप हमारे सामने प्रगती के पंख लगाकर उँची उडान भरता हुआ नजर आता है तो कभी अति महत्वाकांक्षा के कारण गोते खाता हुआ भी नजर आता है। हर सिक्के के दो पहलु होते है। स्त्री सक्षमीकरण, मीडिया और स्त्री का बदलता हुआ स्वरूप इसमें भी अच्छा बौर बुरा पहलु हमारे सामने आता है। एक ओर मीडिया स्त्री पर होनेवाले अन्याय–अत्याचार का विरोध कर उसका सम्बल बन जाता है तो दुसरी ओर उसकी दैहिकता का प्रदर्शन कर कुशल व्यापारी भी बन जाता है । स्त्री जीवन की सुरक्षा की सौ प्रतिशत हामी देना आज भी कदापि संभव नहीं है। हॉ..... मगर एक बात जरूर ध्यान देने जैसी है कि, स्त्री जीवन को लेकर लगातार चिंतन हो रहा है। ३

दृश्य–श्राव्य माध्यम का प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। सक्षमीकरण के युग में स्त्री विज्ञापन एंव टी. वी. चौनलों के क्षेत्र में विलासी जीवन की अन्धी महत्वाकांक्षा में फँसती जा रही है जो समाज स्वास्थ के लिए चिन्ता की बात बनती जा रही है।

मीडिया स्त्री से अधिक उसके व्यावसायिक रूप को अधिक महत्व देता है और यहीं पर स्त्री के बदलते रूप की सक्षम छवि मलिन होने लगती है। इस व्यवसाय में स्त्री के अस्तिव को ही दॉव पर लगाया जाता है। और आश्चर्य की बात स्त्री अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए दॉव पर लग जाती है। किन्तू यह सच है कि बाजार ने अपने आकर्षक प्रस्तावों और प्रविधियों से एक खास स्त्री वर्ग को अपने मायाजाल में फॉस लिया है। विश्व सुन्दरी प्रतियोगिता से लेकर राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं का आयोजन बाजार का ही कमाल है। ४

मीडिया स्त्री सशक्तिकरण में बहुत सहाय्यक साबित हुआ है जिसमे स्त्री का बदलता हुआ स्वरूप अबला नहीं सबला नारी हमारे सामने प्रस्तुत होती है। परन्तु इस व्यवसाय में कभी–कभी स्त्री को केवल इस्तेमाल किया जाता है बौर अससे मन में भय और आतंक छा जाता है, नारी का भविष्य कहॉ खडा है। किस मायने में उसका स्वरूप बदल रहा है? घर–घर में टेलिविजन पर विज्ञापन, धारावाहिक, फिल्में देखी जाती है। जब टी.वी. पर कोई विज्ञापन आता है तो स्त्री देह की सौदेबाजी पर तरस आता है। जहॉ स्त्री की जरूरत ही नहीं वहॉ उसे कम से कम कपडों में दिखाया जाता हैं। तसलिमा नसरीन ठीक कहती है, ये विज्ञापन व्यवसायी माल से औरत को ज्यादा अहमियत देने की कोशिश में लगे रहते है, पुरूषों के सेविंग ब्लेड, सिगरेट, शार्टिग,–शुटिंग, जूता, शराब, शैम्पु, साबुन सब कुछ में अनावश्यक रूप से औरत को प्रस्तुत किया जाता है। दरअसल स्त्रियॉ कोई काम नही कर रही है, सिर्फ इस्तेमाल की जा रही है और इस समाज में शायद इस्तेमाल होना ही उनका मुख्य काम है।५ एक ओर वह अपनी अस्मिता का संघर्ष कर रही है तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता का ही सौदा करती नजर आ रही है। कैसी विडंबना है ये आधुनिक नारी की? क्या आज भी वह कठपुतली ही तो नही है? सदियों से उससे नाच करवाया जा रहा है । केवल डोर बदली गयी है। मीडिया ने एक तरफ स्त्री सक्षमीकरण को बढावा दिया है तो दुसरी तरफ उसका अवमुल्यन किया है। वह केवल एक वस्तु, चीज के रूप में इस्तेमाल होती है तब एक प्रश्न निर्माण होता है, क्या केवल पैसा कमाना ही करियर है? अस पर गंभीरतासे सोचना होगा । स्त्री का स्वरूप बदला हुआ है, पारंपारिक से आधुनिक तक का असका सफर आसान नही है। संघर्ष के अनेक मुकामों को उसने पार किया है पर उसका अन्त कहॉ है, यह विचारणीय बात है। आज मीडिया हम पर इस तरह छाया हुआ है कि सही और गलत का खयाल भी हमें नही है। दूरसंचार के माध्यम से भारतीय सांस्कृतिक मुल्योंपर सर्वाधिक कुठाराघात हुआ है। सांस्कृतिक प्रदुषण के कारण भारतवासियों के

मन मस्तिष्क निरन्तर विकृत होते जा रहे है । विदेशी मीडिया द्वारा हमारी संस्कृती पर आक्रमण हो रहा है, जिसके कारण प्रतिफल हमारे संस्कार नष्ट हो रहे है और हम असहाय बने हुये है।६

विज्ञापन की तरह मीडिया का दुसरा अंग धारावाहिक है, जो हर परिवार से नजदीकी रिश्ता बनाये रखता है जिसमें स्त्रियों का बदलता हुआ स्वरूप हमें देखने को मिलता है। इसमें अच्छाई पर बुराई की पकड इतनी हावी होती है कि लगता है अब कुछ अच्छा नहीं होगा । हालाकिं जीत अच्छाई कि होती है, परन्तु स्त्री का वह नकारात्मक पात्र सकारात्मक पात्र पर भारी पडता है। इसे केवल मनोरंजन तक सीमित न रखकर संवेदन शील दर्शक उसीको अपना मुखिया मानकर असल जिन्दगीं में बर्ताव की कोशिश करता है। सिक्के के दो पहलु की तरह धारावाहिकों में भी नायिका और खलनायिका के पात्र समान्तर रूप में चल रहे है। नकारात्क पात्रों को देखकर मन में प्रश्न उठते है क्या नारी षडयंत्र का जाल बुनने में ही अपने आपको धन्य मानती है? हर धारावाहिक में ऐसा पात्र होता है जिसके फेंके हुए जाल में नायिका को गिर–गिर कर उठना पडता है। जैसे कुमकुम भाग्य की नायिका प्रज्ञा, तनु और आलिया के जाल में फॅसती है, गिरती है, उठती है, फिर गोते खाते हुए उसका संघर्ष जारी है। कितनी बार और कब तक और क्यो कोई स्त्री अपनी अच्छाई की सफाई देती रहे? पवित्र रिश्ता नायिका प्रधान धारावाहिक की अर्चना भी अपने आपको साबित करते करते थक जाती है। तरस आता है उस पर सास के कितने अन्याय अत्याचार को सहन करके उसे सँभलना पडता है। इन धारावाहिको में संयम, धैर्य, त्याग, प्रेम, मर्यादा यह इन पात्रों में बहुत कम होता है और स्वार्थभरा कुटिल षडयन्त्र ही अधिक होता है। अपने ही परिवार को तोंडने की कोशिश इन धारावाहिकों की स्त्रियॉ करती है। क्या भारतीय नारी की यही छवि है?

दूरदर्शन पर दिखाई जानेवाली धारावाहीकों में पौराणिक एवं ऐतिहासिक तथा अलौकिक कथाओं को शुरू में दिखाया गया । जिसमे में नारी, मॉ, पत्नी, बहु, सांस, के आदर्श रूपों को दिखाया गया था। असके अनन्तर, राजनितिक, पारिवारिक और सामाजिक सम्बधों की भूमिकाओं में उसे सक्षम रूप में दिखाया गया । इन नायिका प्रधान धारावाहिकों में नारी जाग्रति और उत्थान को दर्शाया गया जो समाज के लिए प्रेरणादायी था। इसके अनन्तर आधुनिक धारवाहिकों में काल्पनिक भूमिकाओं को अधिक महत्व आया जिसे दर्शाया जाता है जिसमें में प्रेरणा तो नहीं परन्तु भावनाओं से खेला जाता है और स्त्री की छवि को मलिन किया जाता है। धारावाहिकों में खलनायिकाओं की भूमिकाओं में नारियों को देखकर कुछ लोग यह समझ बैठते है कि सारी समस्याओं को उत्पन्न करने में नारियों का ही हाथ होता है। ७ ये धारावाहिक नारी के चरित्र को विकृ त कर सामने ला रहे है। हिसंक, झगडालु, कुट–नीतिपरक, हत्यारिन, स्त्री के चरित्रो का चित्रण प्रस्तुत करने के कारण पारिवारिक विघटन हो रहा है। अनैतिक सम्बधों से युक्त धारावाहिक आदर्श नारी के चरित्र को विकृत कर रहे है। इन धारावाहिकों के माध्यम से अजीब–सी संस्कृति घर–घर में घुस गयी है जिसका वास्तविकता से सम्बन्ध नही है। इन धारावाहिकों में नारी का स्वरूप जो बदलता हुआ नजर आ रहा है इससे हमारी संस्कृती पर कुठाराघात हो रहा है।

मीडियाने भारतीय नारी को उसकी शक्ती का एहसास कराया, आकाश में उडान भरने का हौसला दिया। क्योंकि नारी की आन्तरिक शक्ती इतनी बलवान होती है कि विपरित स्थिती का वह डटकर सामना कर सकती है। मीडिया में नारी की प्रतिभा खुद उभरकर आती है। छल कपट, झुट–फरेब तो हर जगह चलता है, मीडिया भी इसके लिए अपवाद नही है। अपने मुल्यों को बचाना और सही गलत को पहचानना यह तो स्त्री के भी हाथ में होता है। इसीलिए मीडिया के माध्यम से किए किये जानेवाले शोषण में स्त्री को ही मौन स्वीकृती तोडकर विद्रोह करना होगा। मीडिया के द्वारा स्त्री की विकृत छवि को दर्शाना इस पर गंभीरता से सोचने की आवश्यकता तो है ही, साथ ही इस विकृत छवि की प्रस्तुती में स्वयं स्त्री की भी कुछ जिम्मेदारी नही है क्या? यह भी सोचना होंगा। व्यक्तिगत स्वंतत्रता के नाम पर स्वैराचार और देह–प्रदर्शन प्रवृति सौ फीसदी मीडिया पर थोपंना कहॉ तक सही है?